अध्याय 3

अ. घराना

ब. वाद्य वर्णन : तानपुरा

अ. घराना

संगीत में घरानों का बड़ा महत्त्व माना गया है। भारत के शास्त्रीय संगीत की विकास परम्परा में गुरू शिष्य परम्परा का विशेष स्थान है। भारत में समय–समय पर ऐसे संगीतज्ञ होते रहे हैं जिन्होंने अपनी कला साधना से संगीत की उपासना की।

प्रत्येक कलाकार की गायकी में अपनी एक विशेषता होती है जो उसे अन्य गायक कलाकारों से पृथक करती है जब संगीत संसार में एक कलाकार बहुत उन्नति करता है तो उसकी कला की विशेषताओं को अन्य व्यक्ति शिष्य बनकर अनुसरण करके उस गायकी को निरन्तर बनाए रखने की चेष्टा करते हैं। यही गुरु शिष्य परम्परा घराना कहलाती है।

घराने से तात्पर्य है कुछ विशेषताओं का पीढ़ी दर पीढ़ी चला जाना अर्थात् गुरू शिष्य परम्परा। इस प्रकार गायन–वादन के अनेक घराने बन गये। इन घरानों में राग स्वर तो एक ही है परन्तु उनके गाने का या स्वरों को प्रयुक्त करने का ढंग अलग–अलग होने से यह कहा जाता है कि यह अमुक घराने की गायकी है।

ग्वालियर घराना

इस घराने के जन्मदाता नत्थन पीर बख्श माने जाते हैं। इनके परिवार के ही सदस्य ग्वालियर के दरबारी गायक हुए। बालष्ण बुआ इचलकरंजीकर भी इसी परम्परा के गायक हुए है। विष्णु दिगम्बर पलुस्कर इनके शिष्य थे।पलुस्कर जी ने बम्बई में पहुँचकर ग्वालियर घराने की गायकी का प्रचार किया। जिसके फलस्वरूप पं.ओमकार नाथ ठाकुर, विनायक राव पटवर्धन, नारायण राव व्यास आदि गायक हमें प्राप्त हुए। शंकर राव पंडित, ष्णराव पंडित तथा राजाभैय पूछवाले भी ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध गायक कलाकार हुए।

विशेषता :

(1) जोरदार तथा खुली आवाज का गायन। (2) ध्रुपद अंग के ख्याल। (3) सीधी तथा सपाट तानें।
(4) बोल तानों में लयकारी। (5) गमकों का प्रयोग।

ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध कलाकार

विनायक राव पटवर्धन

ओमकार नाथ ठाकुर

नारायण राव व्यास

जयपुर घराना

बड़े मुहम्मद खाँ के छोटे पुत्र मुबारक अली लखनऊ वाले एवं करामत अली जयपुर घराने के आरम्भकर्ता माने जाते हैं। ये दोनों महाराज रामसिंह के दरबारी गायक भी है, कोल्हापुर के प्रसिद्ध गायक स्व. अल्लादिया खां साहब भी इस घराने के कलाकार रहे हैं। आगे चलकर इस घराने के दो उप घराने हो गये। (1) पटियाला घराना। (2) अल्लादिया खां घराना। अल्लादिया खां की शैली के गायक मंजी खां, मुर्जी खां, केसरबाई तथा मोघूबाई कुर्डीकर है।

विशेषता :–

(1) खुली आवाज में गायन।

(2) आवाज बनाने की अपनी स्वतन्त्र शैली।

(3) गीत की संक्षिप्त बन्दिश, कलापूर्ण बन्दिश।

(4) आलाप की बढ़त में छोटी–छोटी तानों का प्रयोग तथा वक्र तानें।

(5) स्वर सौन्दर्य पर विशेष बल एवं अप्रचलित रागों का गायन।

जयपुर घराने के प्रसिद्ध कलाकार

अल्लादिया खां

मोघूबाई कुर्डीकर

मल्लिकार्जुन मंसूर

किराना घराना

इस घराने के जन्मदाता बन्दे अली खाँ को बताते हैं। यह दिल्ली के पास एक गाँव किराने के रहने वाले थे। इस घराने के मुख्य कलाकार अब्दुल करीम खाँ, अब्दुल बहीद खाँ, हीराबाई बड़ौदकर, गंगूबाई हंगल, सुरेश बाबू माने और अमीर खाँ अलि, रोशनआरा बेगम, भीमसेन जोशी उल्लेखनीय हैं। इसे स्वर प्रधान घराना भी कहा जाता है।

विशेषता :–

(1) वीणा के ढंग पर रागों की बढ़त करना।

(2) एक–एक स्वर को जोड़ते हुए ख्याल का विस्तार करना।

(3) स्वर लगाने का अपना विशेष ढंग।

(4) शब्दों की अपेक्षा स्वर को महत्त्व।

(5) आलाप प्रधान गायकी।

(6) ठुमरी अंग की गायकी, चैनदार गायकी।

(7) मीड तथा गमक युक्त तान क्रिया एवं अतिविलम्बित लय का प्रयोग

किरानाघराने के प्रसिद्ध कलाकार

अब्दुल करीम

खांसवाई गंधर्व

भीमसेन जोशी

ब. तानपुरा

तानपुरा एक स्वर देने वाला वाद्य है। उत्तरी तथा दक्षिणी दोनों संगीत पद्धतियों में तानपुरे का स्थान शास्त्रीय संगीत जगत में महत्त्वपूर्ण है। इससे गायक तथा वादक को आधार स्वर मिलता है, जिससे उसे स्वर की शुद्धता बनाये रखने में सहायता मिलती है। तानपुरे से दो–चार स्वर नहीं उत्पन्न होते बल्कि सहायक नाद के रूप में सप्त स्वरों के सप्त का मधुर अहसास भी होता है। तानपुरे के बिना शास्त्रीय गायन फीका सा लगता है।

तानपुरे में कोई समय या गीत नहीं निकाला जाता, बल्कि इसके तारों को झंत करके संगीतकार अपने राग की आधार भूमि के रूप में इसका इस्तेमाल करता है। इसे लिटाकर या सीधा खड़ा करके बजाया जाता है।

तानपुरे में पर्दे नहीं होते, केवल चार तार होते हैं। प्रथम तार को मन्द्र सप्तक के पचंम (प) में मिलाते हैं जिन रागों में पंचम स्वर वर्जित होता है वहाँ पंचम वाले तार को मध्यम में मिला लेते है कुछ रागों में जिनमें न तो पंचम और न शुद्ध मध्यम ही प्रयोग होते है जैसे सोहनी, पूरिया और मारवा तो पंचम वाले तार को गन्धार (ग) या निषाद (नि) स्वर में मिला लिया जाता है।

तानपुरे के दूसरे और तीसरे तार को मध्य सप्तक के षड़ज (सा) में और चौथे तार को मन्द्र सप्तक के षड़ज (सा) में मिलाया जाता है। चौथे तार को रवरज का तार भी कहते हैं।

तानपुरे के पहले तीन तार स्टील के होते हैं और चौथा तार पीतल का होता है। यह तार अन्य तारों की तुलना में मोटा होता है कुछ लोग मर्दानी या भारी आवाज के लिए पहला तार पीतल या तांबे का भी इस्तेमाल करते हैं।

तानपुरा के विभिन्न अंग

तूम्बा :– यह लौकी का बना हुआ गोल तथा कुछ चपटे आकार का होता है डाड के नीचे भाग से जुड़ा होता है। तुम्बे के तानपुरे की ध्वनि में वृद्धि तथा गूँज उत्पन्न होती हैं।

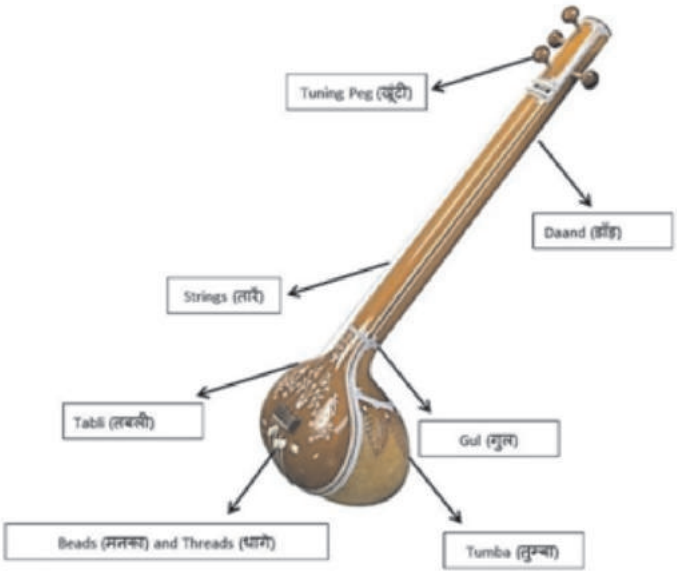

तबली :– गोल लौकी के ऊपर का भाग काटकर अलग कर दिया जाता हैं और खोखले भाग को लकड़ी के एक टुकड़े से ढ़क दिया जाता है इसे तबली कहते हैं।

घुड़च :– इसे घुर्च या घोड़ी या अंग्रेजी में ब्रिज कहते हैं। यह तबली के ऊपर स्थित होती है। जिसके ऊपर चारों तार स्थिर रहते हैं। यह लकड़ी या हड्डी की बनी हुई छोटी चौकी के आकार की होती है।

सूत अथवा धागा :– धुड़च के ऊपर तारों के नीचे सूत अथवा धागे का टुकड़ा प्रयोग किया जाता है। जिसे ठीक स्थान पर स्थिर कर देने से तानपुरे का स्वर अच्छी गूँज के साथ उत्पन्न हो जाता है। इसी को जवारी या जवारी खुलना कहते हैं। इस प्रकार धुड़च के ऊपर की सतह का भाग 'ज्वारी' वाला स्थान माना जाता है।

कील अथवा लंगोट :– तूम्बे के पेंदे में तार बाँधने के लिये एक कीली अथवा तिकोनी पट्टी होती है जिसे कील, लंगोट अथवा मोगरा कहते है। इसी से तार शुरू होकर खूँटियों तक जाते हैं।

पत्तियाँ :– सजावट के लिये तूम्बे के ऊपर लकड़ी की सुन्दर पत्तियाँ बनाई जाती है। जिन्हें शृँगार भी कहते हैं।

गुल :– जिस स्थान पर तुम्बा और ऊपर का भाग मिलता है गुल कहलाता है।

डाँड :– यह तानपुरे के ऊपर का भाग है जो लम्बी और पोली (खोखली) लकड़ी की बनी होती हैं। इसके नीचे का भाग तूम्बे से जोड़ दिया जाता है। ऊपर के भाग में चार खूंटियाँ होती है। डाँड के ऊपर चारों तार तने रहते हैं।

अटी या अटक :– तानपूरे के चारों तार कील से धुड़च पर होते हुए ऊपर को जाते हैं। ऊपर की ओर सर्वप्रथम हाथी दाँत की एक पट्टी जिस पर चारों तार अलग–अलग रखे जाते हैं। जिसे अटी, अटक या मेरू कहते हैं।

तार गहन :– अटी से होता हुआ तार पुनः ऊपर जाता है। आगे एक दूसरी पट्टी होती है जिसके छिद्रों के बीच से होकर तार खूँटियों तक जाते हैं। इस पट्टी को तार गहन कहते हैं।

खूँटियाँ :– खूँटियां तानपुरे के ऊपरी भाग में होती हैं। अंटी और तार गहन से होते हुए चारों तार खूंटियों से क्रमशः बाँध दिये जाते हैं। दो खूटियाँ तानपुरे के सामने के भाग में, एक डाँड की बाँई और दूसरी दाहिनी ओर होती है। खूँटी को घुमाने से ही तार को कसा या ढ़ीला किया जाता है।

सिरा या ग्रीवा :– अटी और तार गहन के बाद तानपुरे का ऊपर का भाग 'सिरा' या ग्रीवा कहलाता है। इसे मुख या मस्तक भी कह सकते है। इसी भाग में खूँटियाँ लगी रहती है।

मनका :– स्वरों के सूक्ष्म अन्तर को ठीक करने के लिये हाथी दाँत, काँच अथवा प्लास्टिक के मोती तानपुरे के चारों तार में धुड़च और लंगोट के बीच पिरोये जाते हैं। इन्हें मनका कहते हैं।

तानपुरे का पहला तार सीधे हाथ की मध्यमा अँगुली से बाकी तीनों तारों को तर्जनी अँगुली से कोमल टंकोर से छेड़ा जाता है। तानपुरा बजाते समय ध्वनि उतनी ही करनी चाहिये जितनी गायक की जरूरत है। चारों तार एक साथ नहीं छेड़े जाते बल्कि एक–एक तार को लयबद्ध ढंग से क्रमशः छेड़ा जाता है।

मुख्य बिन्दु –

- प्रत्येक व्यक्ति के गायन वादन पर उसके स्वभाव, उसकी शिक्षा, उसकी परिस्थिति, वातावरण आदि का प्रभाव पड़ता है इसी प्रभाव के कारण मनुष्य के गायन अथवा वादन शैली का निर्माण होता है। जिसे संगीत में घराना नाम से जाना जाता है।
- राग की शुद्धता व ताल के साथ सामांजन्य ग्वालियर घराने की विशेषता है। यह घराना लय प्रधान, प्रदर्शन प्रधान है। किराना घराना स्वर की शुद्धता व मधुरता के लिये विख्यात हैं।जयपुर घराने में स्वर व ताल पर बराबर ध्यान दिया जाता है तथा ताल व रागों की विविधता और बन्दिशों के लिये विख्यात है।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत में तानपूरा एक महत्वपूर्ण तत् वाद्य है श्रुति–शुद्धता तथा षड़ज स्वर का स्थायित्व भारतीय संगीत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग होने के कारण इस वाद्य का निरंतर बजाया जाना अनिवार्य माना जाता है।तानपूरा हमें षड़ज का मुख्य नाद देता है। जो हमारे गायन का प्रमुख आधार स्वर होता है। उसके साध षड़ज, पंचम या निषाद के नाद को शामिल करने से अन्य स्वरों के सहायक नाद व अनुगुंज बनती है जिससे गायक को अपने स्वरों को शुद्धता से लगाने में सहायता मिलती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(1) गायन की कुछ विशेषताओं का पीढ़ी दर पीढ़ी चलने को कहते हैं।

(अ) घराना (ब) परिवार (स) सप्रल (द) थार

(2) किराना घराने के कलाकार थे।

(अ) बड़े गुलाम अली (ब) फैयाज़ खाँ (स) अब्दुल करीम खाँ (द) शंकर राव पंडित

(3) तानपुरे में कुल कितने तार होते हैं।

(अ) पाँच (ब) चार (स) तीन (द) दो

(4) तानपुरे में खरज का तार किस तार को कहते है?

(अ) पहला तार (ब) तीसरा तार (स) चौथा तार (द) दूसरा तार

(5) ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध गायक कौन थे?

(अ) फैयाज खाँ (ब) भीमसेन जोशी (स) केसर बाई (द) कृष्णराव पण्डित

उत्तरमाला– (1) अ (2) स (3) ब (4) ब (5) स (6) द

लघुउत्तर प्रश्न –

(1) उत्तर भारतीय संगीत में तानपुरे का क्या स्थान है?

(2) सीधी और सपाट तानों का प्रयोग कौन से घराने की विशेषता है?

(3) भीमसेन जोशी किस घराने के थे?

(4) विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का सम्बन्ध कौन से घराने से था?

(5) गायनवादन में तानपूरे का क्या काम है?

निबन्धात्मक प्रश्न –

(1) तानपुरे की उपयोगिता का विस्तार से वर्णन करिये।

(2) तानपुरे के विभिन्न अंगों का वर्णन करते हुए बताईये कि तानपुरे के तारों को किन–किन स्वरों में मिलाते हैं?

(3) संगीत में घरानों से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिये।

(4) घराने की अपनी अलग–अलग गायन शैली किस आधार से बनती हैं?

(5) जयपुर घराने की विस्तार से जानकारी दीजिये।

(6) किराना घराने के जन्म दाता कौन थे? इस घराने की क्या विशेषता थी तथा कलाकारों की जानकारी दीजिये।

महान महिला संगीतज्ञ

जोहरा बाई आगरेवाली

अंजनि बाई मालपेकर

बेगम अख्तर

गंगू बाई हंगल